उमेश रश्मि रोहतगी-सत्य प्रकाश राजबँशी जी की नजर में

मैं जो भी बात कहूँ आपका जप होवे ।

मैं जो भी काम करु आपका भजन होवे।।

मै जो भी रचूं आप की मुद्रा होवे ।

मैं जहाँ भी चलूं आपकी प्रदाक्षिणा होवे ।।

मै जहाँ भी बैठूँ आपको प्रणाम होवे ।

मेरा जो भी विलास हो, आपकी पूजा होवे ।।

मैं जो भी ग्रहण करु, आपका प्रसाद होवे ।

मैं जो भी निहारु, आपका र्दशन होवे ।।

मैं जो भी पियू, आपका चरणामृत होवे ।

मैं जहाँ भी रहूं , आपका महल होबे ।।

मैं जो भी पाऊँ, आपका आशीष होवे ।

मैं जो भी करु, आपकी सेवा होवे ।।

गीता के नवमे अध्याय के श्लोक सत्ताइसबें के आधार पर